संस्तुति

मैं संस्तुति करता हूँ कि इस लघु शोध-प्रबन्ध को परीक्षार्थ अग्रेषित किया जाए।

दि. 14·09·1996

शिवाजी विश्वविद्यालय
हिन्दी विभाग
कोल्हापुर

अध्यक्ष,
हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर।

डॉ.वसंत केशव मोरे
एम.ए.,पीएच.डी.

प्रमाण पत्र

मैं प्रमाणित करता हूँ कि श्री किरण बळवंत पाटोळे ने शिवाजी विश्वविद्यालय की एम्.फिल (हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध "राजेंद्र यादव के "अनदेखे अनजान पुल" उपन्यास का अनुशीलन" मेरे निर्देशन में सफलता-पूर्वक पूरे परिश्रम के साथ पूरा किया है। यह कार्य पूर्व योजनानुसार सम्पन्न हुआ है। यह परिक्षार्थी की मौलिक कृति है। श्री.किरण बळवंत पाटोळे के प्रस्तुत शोध-कार्य के बारे में मैं पूरी तरह संतुष्ट हूँ।

(डॉ.वसंत केशव मोरे)
शोध-निर्देशक

कोल्हापुर।
दि : 14.09-1996

प्रख्यापन

यह लघु शोध-प्रबन्ध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्.फिल. के लघु शोध-प्रबन्ध के रूप में प्रस्तुत कर रहा हूँ। यह रचना इससे पहले इस विश्वविदयालय या अन्य किसी विश्वविदयालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

कोल्हापुर :
दिनांक : 14.09.1996

शोधछात्र,
(किरण बळवंत पाटोळे)

प्राक्कथन

उपन्यास गदय साहित्य की सर्वाधिक सशक्त एवं विशाल विधा है। इसमें जीवन का सर्वांगिण चित्रण होता है, इसलिए उपन्यासकार को विस्तृत कथावस्तु के माध्यम से अपनी कला प्रदर्शन का पूर्ण अवसर मिलता है। मानव जीवन और कल्पना का समन्वित चित्रण करने से उपन्यास का क्षेत्र अत्यंक व्यापक एवं लोकप्रिय हो गया है। राजेंद्र यादव स्वातंत्र्योत्तर काल के हिन्दी के सबसे सशक्त उपन्यासकार हैं। प्रायः उनके सभी उपन्यासों में मध्यवर्गीय जीवन का यर्थाथ चित्रण हुआ है। "अनदेखे अनजान पुल" यह राजेंद्र यादव का छठाँ उपन्यास है। जो सन १९६३ में प्रकाशित हुआ है। उसमें कुरूपता की हीनता ग्रन्थी से ग्रस्त मध्यवर्ग की कुरूप युवती "निन्नी" की उतार-चढाव भरी जिंदगी तथा उसकी समस्याओं को लेखक ने चित्रित किया है। यादवजी के "अनदेखे अनजान पुल" में चित्रित कुरूप निन्नी के निम्न-मध्य वर्गीय जीवन का अनुशीलन ही प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध का विषय और उद्देश्य है।

प्रेरणा :-

बी.ए. भाग तीन में पढते समय उपन्यासकार मन्नु भण्डारीजी के "महाभोज" इस उपन्यास ने मुझे अत्यधिक प्रभावित किया। जिससे उपन्यास पढने की मेरी रूची में वृद्धि हुई। एम.ए. की उपाधि प्राप्त करने के बाद मैंने उपन्यास साहित्य पढना आरंभ किया। इस प्रयास में मैंने "नदी के द्वीप", (अज्ञेय) "पचपन खम्बे लाल दिवारे", (उषाप्रियंवदा) "कुलटा", "मंत्रविद्ध", "अनदेखे अनजान पुल" (राजेंद्र यादव), 'शून्य से शिखर तक' (डॉ.देवेश ठाकुर) इत्यादी उपन्यासों को बडी लगन से पडा। इन उपन्यासों में से राजेंद्र यादव के "अनदेखे अनजान पुल" इस उपन्यास की गहराई ने मुझे अत्यधिक प्रभावित किया। इसी प्रभाव के परिणाम स्वरूप मैंने यह तय किया कि मैं राजेंद्र यादवजी के "अनदेखे अनजान पुल" उपन्यास पर ही एम.फिल. करूंगा। मैंने, अपने परम श्रद्धेय गुरूवर्य तथा शोध-निर्देशक डॉ.वसंत मोरेजी और श्रद्धेय डॉ.अर्जुन चव्हाणजी से विचार विमर्श करके राजेंद्र यादव के "अनदेखे अनजान पुल" उपन्यास पर अपना शोधकार्य करना आरम्भ किया।

राजेंद्रजी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर अब तक निम्नांकित शोध-कर्ताओं ने एम.फिल तथा पीएच.डी. के लिए शोध कार्य किये हैं -

पीएच.डी. :-

१. "राजेंद्र यादव के उपन्यासों में चित्रित मध्यवर्गीय जीवन एक अनुशीलन" -
अर्जुन चव्हाण (शिवाजी विश्वविदयालय,कोल्हापुर)

२. राजेंद्र यादव : "संवेदना और शिल्प" -
कुमारी शशिकला त्रिपाठी,काशी हिन्दू विश्वविदयालय

३. "आधुनिकता की दृष्टि से राजेंद्र यादव और कमलेश्वर के कथा साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन" -
शशि रावत, पंजाब विश्वविदयालय

एम.फिल. :-

"राजेंद्र यादव की क़हानीयों में चित्रित समस्याँए"
भारत श्रीमंत खिलारे (शिवाजी विश्वविदयालय,कोल्हापुर)

"राजेंद्र यादव के सारा आकाश उपन्यास का समीक्षात्मक अध्ययन"
शेख नसरीन युसुफ (शिवाजी विश्वविदयालय,कोल्हापुर)

"राजेंद्र यादव के उपन्यासों में चित्रित परिवार"
शेळके भारती (शिवाजी विश्वविदयालय,कोल्हापुर)

राजेंद्र यादव के "अनदेखे अनजान पुल" उपन्यास को लेकर अभी तक कोई कार्य नहीं हुआ है। इसलिए मैंने अनुसंधान के लिए "अनदेखे अनजान पुल" उपन्यास का अनुशीलन" इस विषय को चुना है। जिज्ञासा हर खोज की जननी है। इसी जिज्ञासा को लेकर ही मैंने अपना कार्यारंभ किया। तब जिन प्रश्नों का जवाब प्राप्त करने के लिए मैं यह लघु-शोध कार्य पूरा करने में व्यग्र और व्यस्त रहा वे इस प्रकार है -

१. क्या राजेंद्र यादव के व्यक्तित्व का प्रभाव उनके कृतित्व पर दिखाई देती है ?

२. उपन्यास में निन्नी के मनोविश्लेषण में क्या लेखक सफल हुआ है ?

३. क्या उपन्यास में चित्रित कुरूप निन्नी अपनी कुण्ठाओं और हीनता बोध से मुक्ति पाती है या नहीं ?

४. दर्शन किस प्रकार का पात्र है ? उसका महत्व क्या है ?

मैंने इन प्रश्नों के उत्तर अनुसंधान की उपलब्धियों के रूप में उपसंहार में दिए हैं। अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैंने प्रस्तुत विषय को निम्न अध्यायों में विभाजित किया हैं -

<u>प्रथम अध्याय</u> : "राजेंद्र यादव : व्यक्तित्व एवं कृतित्व"

इसके अंतर्गत मैंने राजेंद्र यादव का जीवन परिचय, जन्मस्थान, माता-पिता, भाई-बहन, बचपन, शिक्षा, नौकरी के विरोधी, पितृशौक, पैतृक संस्कार : स्वीकार-अस्वीकार आगरा से कलकत्ता, नौकरी, विवाह तथा संतान दिल्ली प्रवेश इत्यादी व्यक्तित्व के पहलुओं पर प्रकाश डाला है। उनके कृतित्व के अंतर्गत उपन्यासकार, कहानीकार, समीक्षक, अनुवादक, प्रकाशक, सम्पादक आदि पक्षों का विवेचन किया गया है और राजेंद्र यादवजी के उपन्यासों का संक्षिप्त में परिचय दिया है तथा अन्य साहित्यिक कृतियों का नाम निर्देश किया है।

<u>द्वितीय अध्याय</u> : "अनदेखे अनजान पुल : तात्विक विवेचन"

प्रस्तुत अध्याय में "अनदेखे अनजान पुल" की कथावस्तु का तात्विक विवेचन किया है। कथावस्तु के गुण, कथावस्तु की विशेषताएँ बताकर, उपन्यास की कथावस्तु को तीन भागों में विभाजित किया है। उपन्यास का शीर्षक, उपन्यास के कथोपकथन, उपन्यास की भाषा शैली, उपन्यास का देश-काल-वातावरण इत्यादि तत्वों का तात्विक विवेचन किया है। इनके गुण, विशेषताएँ, प्रकारों का गहराई से विवेचन किया है।

तृतीय अध्याय : "अनदेखे अनजान पुल" उपन्यास के प्रमुख पात्रों की चरित्रगत विशेषताएँ।"

उक्त अध्याय के अन्तर्गत मैंने उपन्यास के प्रमुख पात्र तथा उनकी चरित्रगत विशेषताओं का विवेचन किया है। उपन्यास की नायिका कुरूप निन्नी की चरित्रगत विशेषताओं को बाहय पक्ष और अंतरिक पक्ष इन दो भागों में विभाजित किया गया हैं। उपन्यास की नायिका निन्नी शिक्षित कुरूप युवती है। कुरूपता के कारण वह कुंठीत और हीनता बोध से पीडित है। जो उपन्यास के अंत में अपनी कुण्ठाओं और हीनता बोध से मुक्ती पाने में सफल हो जाती है। उपन्यास का नायक दर्शन लेखक के विचारों का प्रतिनिधित्व करनेवाला पात्र है। इन प्रमुख पात्रों की चरित्रगत विशेषताओं को चरित्र-चित्रण की प्रणालियों एवं विशेषताओं के आधार पर प्रस्तुत किया है। उपन्यास के गौण पात्रों के रूप में सागर, बैजल, माँ, रिटायर्ड शर्मा, रम्मी आदि का चरित्र-चित्रण संक्षिप्त रूप में किया है।

चतुर्थ अध्याय : "अनदेखे अनजान पुल उपन्यास में समस्याएँ"

प्रस्तुत अध्याय के अन्तर्गत मैंने अनदेखे अनजान पुल" में चित्रित अनेकविध समस्याओं का विवेचन किया है। जिसमें कुरूपता की समस्या, प्रबल हीन भावना, अंधश्रद्धा, एकतर्फी प्रेम की समस्या, विवाह की समस्या, गुणात्मक सौंदर्य की उपेक्षा, पारिवारीक समस्या, कलाकारों की उपेक्षा, आर्थिक समस्या, रिटायर्ड आदमी एक समस्या, महानगर की समस्या आदि समस्याओं का विवेचन किया हैं।

पंचम अध्याय : "अनदेखे अनजान पुल" उपन्यास में मनोविज्ञान"

इस अध्याय के अंतर्गत मनोविज्ञान, मनोविश्लेषण, साहित्य और मनोविज्ञान, उपन्यास और मनोविज्ञान इत्यादी का स्पष्ट रूप से विवेचन किया हैं। "अनदेखे अनजान पुल" में चित्रित मनोविज्ञान के अंतर्गत निन्नी की हीनता ग्रन्थि, विकृत काम, अलगाववादी प्रवृत्ति, नर्व्हसनेस, मरणवृत्ति, अवसाद, क्षतिपूर्ति आदि निन्नी के मनोवैज्ञानिक पक्षों का समग्रता से विवेचन किया है। मनोविश्लेषण की दृष्टि से निन्नी का पात्र ही प्रभावी लगता है अन्य पात्र इस दृष्टि से प्रभावहीन लगते हैं। इसी कारण केवल निन्नी के मनोविज्ञान का विवेचन किया गया है।

उपसंहार :-

अध्यायों के विवेचन से निकाले गये निष्कर्ष संक्षिप्त रूप में उपसंहार में दिये हैं।

संदर्भ ग्रन्थ- सूची :-

इसके अंतर्गत आधार तथा संदर्भ ग्रन्थों की सूची दी है।

ऋण निर्देश

प्रस्तुत लघु-शोध प्रबन्ध की पुर्ति का श्रेय मैं श्रद्धेय गुरूदेव डॉ.वसंत मोरेजी को देना ही श्रेयस्कर मानता हूँ। अपनी कार्य व्यस्तता के बावजूद भी अपने पग-पग पर मेरे लेखन की त्रुटियों को दूर करके मुझे सही दिशा निर्देशन किया। आपके उदार एवं आत्मीय मार्गदर्शन से ही मैं इस शोधकार्य की अंतीम मंजिल तक पहुँच सका हूँ। आपके प्रति अपनी कृतज्ञता शब्दों में प्रकट करना मेरे लिए संभव नहीं है। आपकी प्रेरणा, स्नेह और आशीर्वाद का मैं निरन्तर अभिलाषी हूँ।

शिवाजी विश्वविदयालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष श्रद्धेय डॉ.पी.एस.पाटीलजी तथा श्रद्धेय डॉ.अर्जुन चव्हाणजी के सहयोग एवं मार्गदर्शन के लिए मैं कृतज्ञ हूँ।

मेरे परम पूज्य माता-पिता के आशीर्वादों के बल पर ही मैं इस कार्य में सफल हो सका हूँ। आपके आशीर्वाद से ही कष्टों का सामना करते हुऐ मैं जीवन में आगे बढ रहा हूँ। आपके चरणों में मेरा यह संकल्प सआदर अर्पित है।

शिवाजी विश्वविदयालय, कोल्हापुर के ग्रंथपाल तथा संबन्धित कर्मचारी आदि के प्रति मैं आभार प्रकट करता हूँ।

इस लघु-शोध प्रबन्ध का टंकन मिलिंद भोसलेजी ने बडी लगन से किया है। अतः मैं उनका हृदय से आभारी हूँ।

इस कार्य को संपन्न बनाने में मेरे स्वजनों कल्पना पाटील, श्रीमती ज्योति पाटील, मोहन सावंत, कलंदर मुल्ला, अरूण गंभीर, अनिल साळुंखे आदि ने मुझे प्रोत्साहन एवं सहयोग दिया। इसलिए मैं उनके प्रति कृतज्ञ हूँ

इस कार्य पूर्ति के लिए शिवाजी महाविद्यालय, बार्शी के प्राचार्य श्रद्धेय डॉ.राजाराम डांगरेजी से मिले सहयोग तथा प्रोत्साहन के प्रति मैं उनका मनस्वी आभारी हूँ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध को सम्पन्न बनाने में जिनसे भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में प्रोत्साहन एवं सहयोग प्राप्त हुआ हैं उन सभी के प्रति मैं हृदय से कृतज्ञ हूँ। तथा हमारे "होटल राजधानी" के सभी कर्मचारीओं के सहयोग के प्रति मैं आभार प्रकट करता हूँ। इनके सहयोग से ही इस लघु शोध-प्रबन्ध को बीना व्यतिक्रम से पूरा कर सका हूँ।

मैं उन कृतिकारों और विद्वानों के प्रति भी कृतज्ञ हूँ जिनकी सृजनात्मक और वैचारिक रचनाओं का उपयोग मैंने इस शोधकार्य में किया है।

इस कृतज्ञता-ज्ञापन के साथ मैं अपना यह लघु-शोध प्रबन्ध अत्यंत विनम्रता के साथ पाठकों तथा विद्वानों के सामने परिक्षणार्थ प्रस्तुत करता हूँ।

शोध-छात्र,

(किरण बळवंत पाटोळे)

कोल्हापुर

दि. 14.09.1996